मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) में प्रतिपादित नवीन बिन्दुएँ

चेतना में निर्भ्रमता

पदार्थ से चेतना का निष्पत्ति नहीं है	चेतना से पदार्थ (लोक) का निष्पत्ति नहीं है	चैतन्य इकाई + पदार्थ + उर्जा-चेतना का अविभाज्य वर्तमान
(भौतिकवादी विचार ✗	(अध्यात्मवादी चिंतन ✗	(सहअस्तित्ववादी चिंतन) ✓

ऊर्जा में स्पष्टता

पदार्थ, ऊर्जा में बदलता नहीं है	चैतन्य, ऊर्जा (ब्रह्म) में बदलता नहीं है	चैतन्य इकाई (जीवन) ही पदार्थ संसार का दृष्टा है,
ऊर्जा, पदार्थ में बदलता नहीं	ऊर्जा, चैतन्य में बदलता नहीं	पदार्थ और चैतन्य व्यापक(शून्य-उर्जा-चेतना) में बनें रहते हैं
(भौतिकवादी विचार ✗	(अध्यात्मवादी चिंतन ✗	(सहअस्तित्ववादी चिंतन) ✓

सहअस्तित्ववादी ज्ञान से ✓

अस्तित्व	चैतन्य	भ्रम -जागृति
अस्तित्व व्यापक वस्तु (सत्ता) में भीगा, डूबा,घिरा जड़ चैतन्य प्रकृति रूप में नित्य वर्तमान है |	चैतन्य इकाई (जीवन) एक गठनपूर्ण परमाणु है, अविनाशी है | इसमें एक मध्यांश और ४ परिवेशों में अंश हैं | जीवन में जीने की आशा है |	**जीवन सुखी होना चाहता है |** जीवन ही अज्ञानवश भ्रमित, दुखी रहता है और ज्ञान पूर्वक जागृत, सुखी, समाधानित होता है | मानवीयता पूर्वक जीता है |
यही सह-अस्तित्व है |	**जीवन ही मानव रूप में दृष्टा है**	**यही चैतन्य -जीवन लक्ष्य है**

सहअस्तित्ववादी ज्ञान से ✓

|| ब्रह्म सत्य ; जगत शाश्वत है ||	|| इश्वर एक; देवी-देवतायें अनेक ||	|| चैतन्य इकाई (जीवन) अविनाशी है, अमर है ||
(शून्य रूपी सत्ता की ब्रह्म संज्ञा है, इसमें जीव-जगत नित्य है)	(व्यापक रूपी खाली स्थान, शून्य की ही इश्वर संज्ञा है, शरीर काल उपरांत जागृत चैतन्य इकाइयों की देवी-देवता संज्ञा है)	(मन-वृत्ति-चित्त-बुद्धि एवं मध्यस्थ क्रिया चैतन्य जीवन के अविभाज्य अंग हैं, क्रियाएं हैं)

वर्तमान में	विकल्प
1. दिशा विहीन शिक्षा	1. मानव केन्द्रित व्यवहार शिक्षा एवं व्यवसाय शिक्षा का कार्यक्रम
2. भय और प्रलोभन वादी भ्रम के आधार पर वर्तमान में की जाने वाली अव्यवस्था	2. मानव तथा मानव संचेतना केन्द्रित मूल्य और मूल्यांकन पद्धति प्रणाली और नीतिपूर्ण कार्यक्रम
3. दिशा विहीनता और भय की पुष्टि में श्रृंगार और अपराधात्मक प्रचार और प्रसार तंत्र	3. समाधान, समृद्धि, अभय और सहअस्तित्व पूर्वक जीने की कला अर्थात् पद्धति प्रणाली एवं नीति पूर्ण प्रचार प्रक्रिया का कार्यक्रम
4. भोग और विरक्ति के बीच में झूलता हुआ, यातनामय दोहरा व्यक्तित्व	4. सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों के निर्वाह की सहज योजना तैयार है

१४/०१/१९८७ , भिलाई नगर, प्रात: ४:३० बजे

भौतिकवादी मानसिकता के अनुसार	**आदर्शवादी (अध्यात्मवादी) मानसिकता अनुसार**
संवेदनाओं में अथवा संवेदनशीलता में अथवा अधिकाधिक संवेदनशीलता की निरंतरता में शुभ घटित होने का प्रयास विगत से करते रहे हैं	धरती से दूर अज्ञात स्थली बनाम स्वर्ग में सुख है | जीना संज्ञा से मुक्त होना मुक्ति है , यह परम सुख बताये
इस धरती पर मानव इतिहास के अनुसार उन्नीसवी शतक आठवी दशक तक उक्त प्रकार से कमोवेशी संभी समुदाय सभी सर्व देश काल में बताये	
उन्नीसवी शतक आठवी दशक के अंत में सर्व शुभ कामना सहित अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) का उदय हुआ	
सभी शुभ परिणामों के प्रति आशान्वित हैं !	
यह वस्तु 'विकल्प' विधि से ही स्थापित होगा | आज के बुद्धिजीवी इसे भारतीय परम्परा के साया में बताना चाह रहे हैं | विगत परम्परा के साथ इस विकल्प को मिलाना संभव नहीं है, न सफल होगा | 'यह' परम्परा से उद्गमित, परम्परा से भिन्न, परम्परा से आगे की बात है ! यह आप्त वाक्य है !	
इसीलिए, विगत के प्रति धन्यवाद, आगत के प्रति आशा !	

तुलनात्मक तालिका

दर्शन →	**भौतिकवाद** (वस्तुवाद)	**रहस्यमयी अध्यात्म** **आधिदैवि, आधिभौतिक** (आदर्शवाद)	**मध्यस्थ दर्शन** (सहअस्तित्ववाद)
चरित्र →	संग्रह	भक्ति, विरक्ति	मानवीयता पूर्ण चरित्र, मूल्य, नैतिकता
लक्ष्य →	भोग, अतिभोग, बहुभोग	मोक्ष, स्वर्ग	अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था
दिशा →	संग्रह सुविधा के लिए व्यापार शोषण	भक्ति, विरक्ति पूर्वक तप	मानवत्व सहित व्यवस्था में जीना व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना
परिणाम →	व्यक्तिवाद, शोषण, युद्ध	व्यक्तिवाद, समुदायवाद, संप्रदायवाद, विवाद, युद्ध	समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व
	भौतिकवाद के अनुसार विज्ञान बड़ा और सही, विज्ञानी छोटा और अविश्वनीय	इश्वरवाद के अनुसार ज्ञान बड़ा, ज्ञानी छोटा	जबकि, मनुष्य ही ज्ञानी है, ज्ञानी से ही ज्ञान और विज्ञान दोनों व्यक्त होता है

भौतिक विज्ञान के अनुसार विज्ञान के विषय में	आध्यात्मवादी ज्ञान, आदर्शवादी मान्यता के अनुसार	सहअस्तित्ववादी ज्ञान विवेक विज्ञान के अनुसार
अनिश्चयता विज्ञान का देन है	अनिश्चयता इश्वर का देन है	अनिश्चयता भ्रमित मानव मानसिकता का प्रकाशन है
अनिश्चयता ही सत्य है	ब्रह्म ही सत्य है इश्वर ही सत्य है	ब्रह्म सत्य, सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही परम सत्य है
विज्ञानी सत्य को नहीं जान पायेंगे	इश्वर कृपा से सत्य ज्ञान होता है समाधि में सत्य ज्ञान होता है	मानव सत्य को जान सकता है
विज्ञान ने यंत्र के द्वारा इन्द्रियों के सीमा को बढाया है	इन्द्रिय ज्ञान असत्य है	इन्द्रीय ज्ञान– रूप गुण पर्यंत सीमित है
विज्ञान के अनुसार मनुष्य एक जानवर है सफलता का बिंदु प्रजनन और आहार है	मानव को 'जीव' कहा सफलता का बिंदु इश्वर इच्छा अनुसार होना है	मानव ज्ञानावस्था की इकाई है सफलता का बिंदु जीवन जाग्रति, शरीर को स्वस्थ, समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व संपन्न होना है
अनिश्चयता ही 'दिमाग खुलने' का प्रमाण है	'दिमाग का बंद होना' (निर्विचार!) होना ही दिमाग का खुलना है	निश्चित वस्तु का बोध होना ही दिमाग का खुलना है
सभी प्राण कोशिका एक जगह से आया है | उद्गम क्यों और कैसे है, इसे विज्ञान समझ नहीं पाया	प्राण कोशिका सामयिक सत्य है इश्वर का संरचना है !	प्राण कोशिका स्वयं स्फूर्त विधि से अस्तित्व सहज प्रकटन है अस्तित्व में विकासक्रम, विकास है |

- ए नागराज, 1986, अमरकंटक